

[श्री श्रीबल्लभ पाणिग्रही]

अनेकों अनेक अच्छे विधेयक हैं। भारत में विधेयकों की कमी नहीं है। लेकिन वास्तव में तात्कालिक स्थिति के कारण कई बार कार्यान्वयन बहुत विलम्बित होता है। बालश्रम के बारे में आपका क्या ख्याल है। दहेज-विरोधी अधिनियम आदि के बारे में आपका क्या ख्याल है ? भारत सरकार के समाज कल्याण मंत्रालय में इस शिक्षावृत्ति को नियंत्रित करने के लिए एक योजना है। लेकिन वित्तीय प्रावधान क्या है ? तीन अथवा चार वर्ष पूर्व 20 लाख रुपए वार्षिक तौर पर दिए गये थे। यह राशि कतिपय व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था करने के लिए कतिपय राज्यों को दी जाती है। तो एक वर्ष में एक करोड़ रुपया आबंटित किया जाता है। लेकिन वह राशि भी खर्च नहीं की गई है। कतिपय राज्यों को वह राशि भी नहीं की गई है। तथापि, कतिपय राज्यों ने धन तो ले लिया है लेकिन उन्होंने उस धनराशि का पूर्णतः उपयोग नहीं किया है। कार्य के प्रति उनका नजरिया उदासीन है। इस समस्या के निराकरण में ईमानदारी तथा गंभीरता होनी चाहिए।

अपराह 6.00 बजे

मैं लंबा भाषण देना नहीं चाहता हूँ। इसलिए स्वाभाविक रूप से इस समस्या का निराकरण गरीबी की समस्या के निराकरण से किया जा सकता है। इसलिए ऐसा किया जा सकता है। तथापि, सामाजिक जागृति पैदा की जानी चाहिए। सभी प्रकार के परिवारों से संबंध रखने वाले सभी गुणों के बच्चों के लिए शैक्षणिक सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि जब तक गरीब बच्चों के लिए बोर्डिंग, रहन-सहन आदि की व्यवस्था नहीं कर दी जाती है, तब तक ये गरीब परिवार अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेज सकते हैं। इसलिए इस बात का भी ख्याल रखा जाना चाहिए।

दूसरे, यदि हम ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई का लाभ देते हैं और यदि वर्षभर में हमारे पास एक के बाद एक फसलें होती हैं तो वह फसल ही अधिसंख्य लोगों को काम में नियोजित रखती है। तब अशिक्षित युवकों को उनके अपने क्षेत्रों में उनके घरों के नजदीक रोजगार मिल सकता है।

तीसरे, गरीबी के कारण लोगों की बुढ़ापे में उनके बच्चों द्वारा देखभाल नहीं की जाती है। इसलिए इन गरीब लोगों के लिए वृद्धश्रम होने चाहिए तथा बच्चों के लिए अनाथालय भी होने चाहिए। इसके लिए बजट में पर्याप्त प्रावधान किया जाना चाहिए तथा राज्यों को कुछ सहायता दी जानी चाहिए। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : क्या आप अपना वक्तव्य समाप्त कर रहे हैं अथवा क्या आप कुछ और समय लेंगे ?

श्री श्रीबल्लभ पाणिग्रही : मैं अपना वक्तव्य समाप्त कर रहा हूँ महोदय... (व्यवधान) मुझे कुछ और मुद्दे पेश करने हैं लेकिन आज मैं अपना वक्तव्य यहीं समाप्त करता हूँ।

अपराह 6.01 बजे

प्रधानमंत्री द्वारा वक्तव्य

नागालैण्ड शान्ति वार्ता

[अनुवाद]

प्रधानमंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : महोदय, इस सम्माननीय सभा को नागालैण्ड में विद्रोह के इतिहास की जानकारी है।

विभिन्न नागा गुणों का आपस में तथा राज्य प्राधिकारियों के बीच हुई भाई-भाई की हत्या संबंधी मुठभेड़ों के कारण जनजीवन की हानि हुई है, लोक व्यवस्था बिगड़ी है तथा राज्य का आर्थिक विकास अवरुद्ध हुआ है। लोक हिंसा से तंग आ गए हैं तथा वे शांति चाहते हैं।

पदधारण करने के तुरंत पश्चात् मैंने पूर्वोत्तर में नागालैण्ड तथा अन्य राज्यों का दौरा किया था। मैंने अपराध जाति के तत्वों के साथ बिना किसी पूर्व शर्त के वार्ता करने की सरकार की मंशा दोहराई थी। नागालैण्ड राष्ट्रीय समाजवादी परिषद् के इसाक-मुलवाह गुण के साथ हुई वार्ताओं में 1 अगस्त, 1997 से तीन महीने के लिए अब युद्धविराम करने तथा राजनैतिक स्तरों पर चर्चाएँ शुरू करने की सहमति हो गई है।

सरकार उन अन्य विद्रोही नागा गुणों के सम्पर्क में भी है जो अपनी गतिविधियाँ समाप्त करने के लिए कटिबद्ध हो गये हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैं नागालैण्ड तथा पूर्वोत्तर राज्यों में स्थायी शान्ति बहाल करने के लिए उठाये जा रहे सकारात्मक कदमों के लिए प्रधानमंत्री, भारत सरकार, नागालैण्ड सरकार तथा एन. एस. सी. एन. के नेता को बधाई देता हूँ।

श्री राजेश पायलट (दौसा) : महोदय, मैं आपकी उन भावनाओं में सहभागी होता हूँ जो आपने माननीय प्रधानमंत्री के प्रति व्यक्त की है। लेकिन मैं यह बात भी स्पष्ट कर दूँ कि ऐसे चैनल पहले भी खुले थे। हम जिनके चैनलों के सम्पर्क में थे उनके संबंध में इनमें से कुछेक लोगों की यह भावना थी कि अनुवर्ती कार्यवाही में कोई ईमानदारी नहीं बरती गई है।... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूँ कि हमें अब इस पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। यह एक सकारात्मक मुद्दा है तथा मैं समझता हूँ कि हमें इस पर नहीं।

(व्यवधान)

श्री राजेश पायलट : इसलिए, प्रधानमंत्री से मेरा निवेदन है कि वह इसे ईमानदारी से करें। अत्यंत सकारात्मक कदम के लिए मैं प्रधानमंत्री को बधाई देता हूँ।

माननीय प्रधानमंत्री जी आज आपके शासन के दौरान दो विशेष चीजें हैं। पहले, आपने नागालैण्ड के विषय में बड़ा शुभ समाचार दिया